ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

दुधारु पशुओ को संक्रमण काल (transition Period) में उर्जा की पूर्ति हेतु बाईपास फैट खिलाये एवं किटोसिस से बचाए

डॉ. राजेश नेहरा, डॉ. बुधाराम, डॉ. सुनील मीना, डॉ. प्रवीण पिलानिया एवं डॉ. भानुप्रकाश

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, राजुवास, बीकानेर

श्रेष्ठ नस्ल के पशु को संतुलित आहार दिया जाये तो अधिकतम उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है । पशुपालन के कुल खर्च का लगभग 70 % भाग पशु आहार पर खर्च किया जाता है । हमारे देश में चारे व दाने की काफी कमी है इस कारण पशुओ को संतुलित आहार नहीं मिल पाता है , एवं पशु के शरीर में उर्जा व प्रोटीन की कमी हो जाती है । पशु के ब्याने के तीन सप्ताह पहले एवं तीन सप्ताह बाद के समय को संक्रमण काल कहा जाता है । जिसमे पशुओ में उर्जा की कमी रहने के कारण उनका उत्पादन प्रभावित होता है, एवं पशुओ में उपापचय रोग किटोसिस हो जाता है

बाईपास फैट क्या है :- बाईपास फैट अधिक दूध उत्पादन देने वाले पशुओं को गर्भावस्था के अंतिम दिनों और शुरुवाती दुग्धावस्था के दौरान देने पर सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्राप्त होते है। पशुओं को पशु आहार में बाईपास फैट देने पर बाईपास फैट रूमन में अपघटित नहीं होती है , बल्कि एबोमेजम की अम्लीय पी.एच. पर इसका पाचन होता हैं, अर्थात ये रूमेन को बाईपास कर जाती हैं। बाईपास फैट का मेल्टिंग सूचकांक ज्यादा होता हैं , इस कारण से भी ये रूमन में अपघटित नहीं होती हैं। कई खाद्य पदार्थो में प्राकृतिक रूप् में कुछ मात्रा बाईपास फैट की पायी जाती हैं जैसे- बिनौला, सीड, सोयाबिन इत्यादि।

बाईपास फैट (वसा) तैयार बनाने की विधियां-

1. वसा का हाइड्रोजनीकरण करके

2. लंबी श्रृंखला वाले वसीय अम्लों के “कैल्सियम साबुनीकृत लवण“ बनाकर

3. तेल वाले बीजों का फार्मेल्डिहाइड उपचार करके

4. फ्यूजन विधि

बाईपास फैट खिलाने के फायदेः-

1. बाईपास फैट पशु को पोजिटिव ऊर्जा बेलेन्स में रखती हैं और पशु में नेगेटिव ऊर्जा बेलेन्स वाले रोग अथवा उपापचयी रोग जैसे कीटासिस और मिल्क ज्वर इत्यादि नहीं होते है।

2. पशु की शारीरिक दशा एवं स्वास्थ्य में सुधार होता हैं।

3. पशु की प्रजनन क्षमता में वृद्धि होती हैं।

4. पशुओं का दूध उत्पादन बढ़ता हैं।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

5. दूध में वसा की मात्रा बढ़ती हैं।

6. बछड़े-बछड़ियों का अच्छा शारीरिक विकास होता हैं।

पशु को दी जाने वाली बाईपास फैट की मात्राः- बाजार में अलग अलग ब्रांड के बाईपास फैट उपलब्ध हैं जैसे- केमिन , मेगालेक और डेयरीलेक इत्यादि। बाईपास फैट की 100 ग्राम से 400 ग्राम मात्रा तक प्रति गाय, प्रतिदिन की दर से खिलाया जा सकता हैं। इसकी मात्रा का निर्धारण इसके ब्रांड और गाय की दूध उत्पादन क्षमता के हिसाब से करते हैं। पशु को संक्रमण काल में बाईपास फैट खिलाकर निश्चित तौर पर पशुपालक अधिक दूध उत्पादन और बछड़े-बछड़ियों में अच्छी शारीरिक विकास दर प्राप्त कर लाभ कमा सकते हैं।